शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवंबर 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भारत की कस्तूरी: कस्तूरबा

संजय चौहान (शोधार्थी)
शोध निर्देशक डॉ.पुष्पेंद्र दुबे
महाराजा रणजीत सिंह कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल साईंसेस,
खंडवा रोड, इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

प्रस्तावना

आमतौर पर हमारा ध्यान राजनीतिक क्षेत्र के महान नेताओं की ओर जाता है, लेकिन उनकी जीवन संगिनियों के बारे में उतना विचार नहीं किया जाता। देश की गुलामी के दिनों में अनेक गृहस्थ पुरुषों ने स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया। उनकी पत्नियों ने उनके देषप्रेम के आगे अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। उन्होंने अनेक प्रकार के अभावों में अपना जीवन बिताया। उन्होंने न सिर्फ स्वयं को कष्ट में डाला वरन् अपने पूरे परिवार की सुख-सुविधाओं का त्याग कर दिया। इन गृहस्थों में महात्मा गांधी और कस्तूरबा का त्याग बहुत उंचे दर्जे का है। उनके कष्ट सहन करने की क्या सीमा थी, यह आज जब विचार करते हैं तो उनके प्रति हमारा मस्तक आदर और सम्मान से झुक जाता है। कस्तूरबा ने महात्मा गांधी का जीवन बनाने में अतुलनीय योगदान दिया। बालिका वधू से लेकर देष के आजादी आंदोलन की नायिका बनने तक कस्तूरबा ने अपने और अपने हमसफर के जीवन को जिस प्रकार बनाया-संवारा वह स्पृहणीय है। सन् 1869 के चैत्र मास में गोकुलदास की चैथी संतान के रूप में जन्मी कस्तूर की सगाई छः वर्ष की कच्ची अवस्था में राजकोट के दीवान करमचंद के पुत्र मोहन के साथ कर दी गई। बाद में किशोरावस्था के प्रवेश द्वार पर ख़ड़े मोहन-कस्तूर का विवाह कर दिया गया।

इस बारे में मोहन ने अपनी आत्मकथा में लिखा, ‘‘तेरह वर्ष की उम्र में हमारा विवाह हुआ। आज मेरी नजरों के सामने बारह-तेरह बरस के बालक मौजूद हैं। उन्हें देखता हूं और अपने विवाह का स्मरण करता हूं तो मुझे अपने उपर दया आती है और उन बालकों को इसके लिए बधाई देने का जी चाहता है कि जो मेरी जैसी हालत से बच गए।’’ विवाह के समय करमचंद दुर्घटनाग्रस्त हो गए। उपचार के बाद उनकी स्थिति नहीं संभली और एक दिन वे इस दुनिया से चले गए। घर अचानक विपन्नता से घिर गया। जब मोहन ने विलायत जाने का विचार किया तब बिना किसी याचना के कस्तूर ने अपने सारे गहने उतार कर मोहन के सामने रख दिए। अषिक्षित, निरक्षर और मूढ़ आदि शब्दों से विभूषित पत्नी कस्तूर ने अपने विषाल हृदय और कर्तव्य निष्ठा का परिचय दिया। मोहन के विलायत जाने पर कस्तूर ने पारिवारिक दायित्व को संभाला। हरिलाल के जन्म के साथ ही कस्तूर के साथ ‘बा’ शब्द जुड़ गया। उनके व्यक्तित्व की गरिमा और अधिक बढ़ गई। जब तीन साल बाद मोहन बैरिस्टर की उपाधि लेकर इंग्लैंड से लौटे तो पूरा घर खुशियों से भर गया। मोहन अपनी मां पुतली बाई से मिलने को उत्कंठित थे, परंतु जब उन्हें

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवंबर 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मां के स्वर्गवास के विषय में बताया गया तो वे सारी पीड़ा को मन में दबाकर आंसुओं को पी गए। अब पति-पत्नी की उम्र बाइस साल हो गई। तीन साल के लंबे अंतराल के बाद कस्तूर का यौवन खिल गया।

दक्षिण अफ्रिका में

विदेश से लौटने के बाद मोहन के रहन-सहन में परिवर्तन आ गया। इससे घर का खर्च भी बढ़ गया। काफी कठिनाइयों के बाद मोहन की गाड़ी चल निकली और वे प्रतिमाह करीब तीन सौ रुपये घर लाने लगे। इतने में मोहन के पास दक्षिण अफ्रीका जाने का प्रस्ताव आया। जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया और 1893 में दक्षिण अफ्रीका जाने का निष्चय किया। अब उन्हें सिर्फ पत्नी वियोग की चिंता थी। उन्होंने एक साल बाद मिलने का आष्वासन कस्तूरबा को दिया। राजकोट में अपने दो बच्चों हरिदास और रामदास के साथ कस्तूरबा का जीवन पूर्ववत बीत रहा था। जब 1896 में मोहन दक्षिण अफ्रीका से भारत वापस आए तो कस्तूरबा ने मोहन के व्यक्तित्व को काफी बदला हुआ पाया। उनमें अधिक परिपक्वता आ गई थी। मोहन को भारत लौटे एक साल भी पूरा नहीं हुआ था कि उन्हें सेठ अब्दुल्ला का तार मिला। उसमें जल्दी वापस आने का आग्रह था। मोहन ने पत्नी कस्तूरबा और बच्चों के साथ समुद्र यात्रा की तैयारी आरंभ कर दी। 18 दिसंबर 1896 को सभी डरबन बंदरगाह पहुंचे। मोहन का दक्षिण अफ्रीका में काफी विरोध हुआ। उनकी वहाँ पिटाई भी हुई। कस्तूरबा को दक्षिण अफ्रीका पहुंचते ही पति के द्वारा चलाए जा रहे आंदोलन की स्थिति का पता चला। अब वे भी स्वयं को पति के समान समाज सेवा के लिए तैयार करने लगीं।

मोहनदास करमचंद गांधी अपने साथ-साथ कस्तूरबा को भी प्रयोग, साधना और स्वावलंबन का पाठ पढ़ा रहे थे। जहां उनका निवास था वहां के कमरों की बनावट ऐसी थी कि कहीं भी पानी के निकास का कोई प्रबंध नहीं था और न कहीं शौचालय था। प्रत्येक कमरे में मलमूत्र त्याग के लिए बर्तन रखा रहता था, जिसकी लोग स्वयं ही सफाई करते थे। कुछ अतिथि ऐसे भी थे जिन्हें इस बर्तन की सफाई का कुछ भी ध्यान नहीं रहता था। इनके बर्तन गांधी और कस्तूरबा दोनों मिलकर साफ करते। कस्तूरबा इस काम को यह सोच करती थीं कि वे नहीं करेंगी तो उनके पति को करना पड़ेगा। जब एक बार अदालत का एक किरानी जो निम्नजाति का था, मलमूत्र वाला बर्तन अपने कमरे में ज्यों का त्यों छोड़ गया। बहुत अनिच्छा से कस्तूरबा उस बर्तन की सफाई करने गईं।

गांधी के शब्दों में ही उस स्थिति का वर्णन, ‘‘आंखों से मोती के बूंद टपकाती, हाथ में बर्तन लिए, मुझे अपनी लाल-लाल आंखों से उलाहना देती सीढ़ियों से उतरतीं कस्तूरबा की तस्वीर में आज भी खींच सकता हूं। पर मैं तो जितना प्रेमी था, उतना ही जानलेवा पति भी।...इस प्रकार सिर्फ उसके बर्तन उठा ले जाने से मुझे संतोष न हुआ। वह हंसते चेहरे से ले जाए तभी मुझे संतोष था। अतः मैंने उंचे स्वर में कहा, ‘‘यह कलह मेरे घर में नहीं चल सकता।’’ यह वचन कस्तूरबा के हृदय में तीर की तरह चुभा। वह भड़क उठी, ‘‘तो अपना घर अपने पास रखो। मैं जाती हूं।’’ मैं तो ईश्वर को भूल गया। दया का लेश भी मेरे दिल में न रहा। मैंने हाथ पकड़ा। सीढ़ी के सामने ही बाहर निकलने का दरवाजा था। मैं उस असहाय अबला का हाथ पकड़कर दरवाजे तक खींच ले गया। दरवाजा आधा खोला। कस्तूरबा की आंखों

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवंबर 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

से गंगा-यमुना बह रही थी। वह बोलीं - 'तुमको तो शर्म नहीं है। मुझको है। जरा शरमाओ। मैं बाहर निकलकर कहां जाऊं। यहां मां-बाप भी नहीं हैं कि उनके पास चली जाऊं। मैं औरत जात ठहरी, इसलिए तुम्हारी धौंस सहनी ही पड़ती है। अब शरमाओ और दरवाजा बंद करो। कोई देखेगा तो दोनों के मुख पर कालिख लगेगी।'' बाद में धीरे-धीरे अपने पति की सभी इच्छाओं, चाहे वे स्वीकार्य हों या अस्वीकार्य हों, को पूरा करना कस्तूरबा ने अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया। यह उनके लिए दुष्कर तपस्या थी।

भारत वापसी

जब गांधीजी 1901 में भारत वापस आने लगे तो वहां के लोगों ने उन्हें अनेक वस्तुएं उपहार में दीं। उनमें हीरों का हार भी था। कस्तूरबा ने उसे अपने पास रख लिया। गांधीजी इस हार को ट्रस्ट में देना चाहते थे, जिस पर कस्तूरबा से उनका काफी विवाद हुआ। अंततः वह हार ट्रस्ट को सौंप दिया गया। कालांतर में कस्तूरबा को यह अहसास हुआ कि पति के आदर्शों ने उन्हें बहुत बड़े लालच से बचा लिया। गांधीजी के अनेक करीबी लोगों का ऐसा मानना था कि कस्तूरबा का जीवन गांधीजी के कारण दुखी रहता है। एक महिला ने तो इस संबंध में कस्तूरबा को पत्र ही लिख दिया। तब कस्तूरबा ने गुजराती में उस महिला को लिखा, ''तुम्हारा पत्र मुझे बहुत चुभता है। तुम्हारे और मेरे बीच तो कभी बातचीत का भी मौका नहीं आया। फिर तुमने कैसे समझा कि गांधीजी मुझे बहुत दुख देते हैं ? मेरा चेहरा उतरा रहता है, वे मुझे खाने के बारे में दुख देते हैं, यह तुम देखने आई थीं ? मेरे जैसे पति तो दुनिया में भी किसी का नहीं होगा। सत्य के कारण वह सारे संसार में पूजा जाता है। हजारों उसकी सलाह लेने आते हैं। मेरी गलती के सिवाय कभी किसी दिन मेरा दोष नहीं निकाला। मैं दूर की सोच न सकूं, मेरी दृष्टि संकुचित हो तो कहते हैं कि यह सारी दुनिया में होता आया है। गांधीजी अखबारों में चर्चा करते हैं। दूसरे पति घरों में कलह मचाते हैं। अपने पति के कारण तो मैं संसार में पूजी जाती हूं।...तुम मुझ पर झूठा आरोप लगाती हो। इसे कोई मानेगा नहीं। मैं तुम्हारी तरह आजकल के जमाने की नहीं हूं। खूब आजादी लेना, पति तुम्हारे वष में रहे तो ठीक, नहीं तो तेरा और मेरा रास्ता अलग है। लेकिन सनातनी हिंदू को यह शोभा नहीं देता। पार्वती जी का तो यह प्रण था कि 'जन्मोजन्म' शंकर मेरे पति हैं।'

बीमारी में कस्तूरबा का व्यवहार

दक्षिण अफ्रीका में कस्तूरबा को तीन बार भयंकर बीमारी से जूझना पड़ा। मृत्यु के मुख से वे बाल-बाल बचीं। डाक्टरों ने आपरेशन की सलाह दी। कस्तूरबा को बेहोशी की दवा नापसंद थी। अंत में बिना ज्ञानशून्य हुए उन्होंने आपरेशन करवाया। असहय दर्द वे मूक भाव से पीती रहीं। कस्तूरबा के हृदय में अनंत साहस और सहनशक्ति विद्यमान है, इसका ज्ञान किसी को नहीं था। उपचार के दौरान डाक्टर ने उन्हें मांस का शोरबा लेने की सलाह दी, जिससे कस्तूरबा ने इंकार कर दिया। उन्होंने कहा, ''मुझे मांस का शोरबा नहीं लेना है। मानुस तन बार-बार नहीं मिलता है। अच्छा है आपकी गोद में मर जाउं पर मुझसे यह देह भ्रष्ट नहीं की जाएगी।' डाक्टरों द्वारा स्थान परिवर्तन की सलाह देने पर गांधी ने फिनिक्स आश्रम में जाने का निश्चय किया। कस्तूरबा की हालत अत्यंत नाजुक थी। रिमझिम बारिष में कस्तूरबा को डरबन स्टेशन लाया गया। प्लेटफार्म बहुत लंबा था। गांधी कस्तूरबा को बाहों में उठाकर रेलगाड़ी के डब्बे तक ले गए। कस्तूरबा पति-पुत्र सभी का हौसला बढ़ाते हुए कह रही थीं,

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवंबर 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

"तुम चिंता मत करो। मुझे कुछ नहीं होने वाला है।' फिनिक्स में कस्तूरबा का कायाकल्प हुआ। गांधी ने कस्तूरबा को नमक और दाल न खाने का संकल्प दिलाया। इसके लिए गांधी ने स्वयं दो साल तक नमक और दाल न खाने का प्रण किया। जब गांधी ने कस्तूरबा के सामने ब्रह्मचर्य व्रत का प्रस्ताव रखा तो कस्तूरबा ने उसे सहर्ष स्वीकार किया। सन् 1906 में उन्होंने ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा ली। गांधी ने दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह का मार्ग ढूंढ लिया था। सत्याग्रह आंदोलन में स्त्रियों के क्या कर्तव्य थे, इस बारे में गांधी ने कस्तूरबा को कुछ नहीं बताया। जब गांधी भारतीय महिलाओं को सत्याग्रह के बारे में समझा रहे थे तब कस्तूरबा वहां आई और कहा, "मुझे दुख है कि इसके विषय में तुमने मुझे कुछ नहीं कहा। मुझमें क्या कमी है, जिसके कारण मैं जेल नहीं जा सकती ? जिस मार्ग पर चलने के लिए तुम औरों को आमंत्रित करते हो, मैं भी तो उस मार्ग पर चल सकती हूं।...यदि तुम और हमारे बच्चे बंदीगृह के कष्टों को झेल सकते हो, तो मैं क्यों नहीं झेल सकती। मुझे आंदोलन में सम्मिलित होना ही है।' दक्षिण अफ्रीकी सरकार सिर्फ रजिस्टर हुए विवाह को ही मान्य करती थी। यह नारीत्व का घोर अपमान था। कस्तूरबा ने इसके खिलाफ जेल जाने का संकल्प किया और गांधी से बोलीं, 'तुम सोचते हो यह छोटा रामदास जेल यातना सह सकता है और मैं पीछे पड़ जाउंगी ? तुम और बच्चे देख लेना, मैं वहां मर जाउंगी, पर माफी कदापि नहीं मांगूंगी। यदि हार कर वापस लौट आई तो तुम मुझे अपने घर में मत रखना।' अंततः कस्तूरबा अनैतिक कानून के खिलाफ मोरित्सबर्ग जेल भेज दी गई, जहां से तीन माह बाद वे मुक्त हुईं। सत्याग्रह आंदोलन में कस्तूरबा छः साल में कई बार बंदी बनाई गईं और जेल भेजी गईं। वे हर समय अपने पति की प्रेरणा बनी रहीं।

स्वदेश वापसी

सन् 1915 में कस्तूरबा दक्षिण अफ्रीका से पति और बच्चों के साथ भारत वापस लौटीं। साबरमती आश्रम में सभी को गांधी के कड़े अनुषासन में रहना पड़ता था। सब्जियां उबालकर बनाई जाती थीं। कुछ लोगों को यह पसंद नहीं थीं। कस्तूरबा ने पति से पूछकर सब्जियों में छोंक लगाया। भोजन के समय गांधी ने पूछा कि छौंक वाली सब्जी किन लोगों को खानी है। कस्तूरबा ने कहा, "इस विषय में आपको पड़ने की आवश्यकता नहीं है। हम बहने आपस में निपट लेंगी।' एक बार साबुन का खर्च कम करने की बात उठी। कस्तूरबा ने उसी समय इसका विरोध किया। कहा कि उनसे गंदगी सहन नहीं होगी। साबुन का खर्च कम करना बीमारी मोल लेना होगा। गांधी को चुप रह जाना पड़ा। अपने क्षेत्र में कस्तूरबा का निर्णय अंतिम होता। कस्तूरबा ने किसी काम को हेय दृष्टि से नहीं देखा। उनके इस सरल और अभिमान रहित हृदय ने देष के साधारण और गरीब स्त्रियों के हृदय जीत लिए। इसी कारण नमक सत्याग्रह में स्त्रियां घर की चहारदीवारी से बाहर आईं, समय-समय पर लाठियां खाईं और जेल गईं। महिलाओं को सामाजिक सेवा कार्य के लिए संगठित करने का श्रेय बहुत कुछ कस्तूरबा को था।

असहयोग आंदोलन

असहयोग आंदोलन के चलते मार्च 1922 में गांधी को छः साल के लिए कारागार में डाल दिया गया। उस समय कस्तूरबा का एक नया रूप लोगों के सामने उभरा। उन्होंने राष्ट्र के नाम यह सन्देश दिया, "आज मेरे पति को छः साल की सजा हुई है। इस कठिन सजा से मैं थोड़ी

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवंबर 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

अस्थिर और बेचैन हूं -इसे मैं स्वीकार करती हूं। पर यदि हम चाहें तो सजा की अवधि पूरी होने से पहले ही उन्हें कारागार से मुक्त करवा सकते हैं। सफलता पाना हमारे हाथ में है, यदि हम असफल हुए तो दोष भी हमारा ही होगा। अतः मैं उन सभी स्त्री-पुरुषों से आग्रह करती हूं, जिनके हृदय में मेरे लिए स्थान है और जिन्हें मेरे पति पर श्रद्धा है, कि वे सम्पूर्ण हृदय से रचनात्मक कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना ध्यान लगाएं। कार्यक्रम के सभी विषयों में से, चरखा चलाने और खादी के विकास पर सबसे अधिक बल दिया गया है। इस ओर हमारी सफलता, सिर्फ भारत के जन समुदाय की आर्थिक समस्या का समाधान नहीं करेगी, बल्कि हमें राजनीतिक दासता से भी मुक्त करेगी। गांधी को दी गई सजा का उत्तर भारत इस तरह देगा -

क सभी स्त्री-पुरुष विदेशी कपड़ा पहनना छोड़ दें, स्वयं खादी पहनें और दूसरों को खादी पहनने के लिए बाध्य करें।

ख सभी स्त्री-पुरुष प्रतिदिन कताई का अपना धार्मिक कर्तव्य समझें और दूसरों को भी कातना सिखाएं-समझाएं।

ग सभी व्यापारी विदेशी कपड़ों का व्यापार करना छोड़ दें।'

कस्तूरबा के इस संदेश ने लोगों के हृदय में आत्मविश्वास भर दिया। सारे देश में विदेशी कपड़ों की होली जलने लगी और घरों में चरखे की धूम मचने लगी। बहुत लोगों ने आजीवन खादी पहनने और चरखा चलाने का व्रत लिया।

कस्तूरबा को काफी बहुत पसंद थी। एक आश्रमवासी ने गांधीजी से पूछ लिया कि जब चाय काफी शरीर के लिए अनुचित है तो फिर बा क्यों पीती हैं ? गांधी ने तुरंत उत्तर दिया, 'तुम्हें क्या पता कि बा ने क्या-क्या नहीं छोड़ा है। उसकी यह आदत सिर्फ रह गई है। अब मैं उसे यह भी छोड़ देने को कहूं तो मुझ जैसा निर्दय और कौन होगा। जब कस्तूरबा के कानों तक यह बात पहुंची तो उन्होंने काफी भी छोड़ दी।

8 अगस्त 1942 भारत के इतिहास में चिरस्मरणीय दिवस है। इस दिन बंबई में गांधी ने भारत छोड़ो नारे के साथ भारत के स्वतंत्रता संग्राम की बिगुल बजाई, जिसकी गूंज पूरे भारत में सुनाई दी। जब कांग्रस ने गांधी के भारत छोड़ो प्रस्ताव को पास कर दिया तो अंग्रेज सरकार हरकत में आई। प्रातःकालीन प्रार्थना समाप्त होते ही गांधी को गिरफ्तार कर लिया गया। उन्होंने बा के लिए कहा कि यदि वे बंदी नहीं बनाई गई तो उन्हें सेवाग्राम में बापू के काम को आगे बढ़ाना है। बापू की गिरफ्तारी होने के बाद बा ने घोषणा की कि बापू की अनुपस्थिति में शाम की सभा को वे संबोधित करेंगी। जब शाम पांच बजे डॉ.सुशीला नयैर और अन्य साथियों के साथ कस्तूरबा सभा में जाने के लिए बाहर निकल रही थीं, तब पुलिस ने उनकी कार अपने कब्जे में ले ली। तब कस्तूरबा ने डा.नैयर से कहा, 'इस बार ये लोग हमें जीवित बाहर नहीं आने देंगे। तुम देख नहीं रहीं कि यह सरकार दुष्टता की प्रतीक है।' गिरफ्तारी के कुछ समय बाद कस्तूरबा को आगा खां महल ले जाया गया, वहां गांधी पहले से ही बंद थे। 15 अगस्त को महादेव भाई का निधन हो गया। सभी लोग हतप्रभ थे। महादेव भाई के प्रति बा का स्नेह पुत्रवत था। बरामदे में कुर्सी पर बैठी हुई बा आंसुओं से अपने हृदय को हल्का करती रही। उस दिन किसी ने कुछ भी नहीं खाया-पीया। बा चाहे जितनी बीमार हों, उनके व्रत-उपवास नियमित चलते रहते थे।

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवंबर 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

आगा खां महल में आने के बाद बा का स्वास्थ्य बराबर गिरता गया। उनके मन पर उदासी के बादल छाये रहते। उन्हें लगता कि बापू के किसी काम में साथ देने की अब उनकी शारीरिक क्षमता नहीं रही, पर वे किसी तरह चरखा तो चला ही सकती थीं। थकान की अवहेलना कर वे चरखा चलाती रहतीं। आगा खां महल में बा ने कैरम खेलना सीखा। आगा खां महल में बापू बहुत तनावग्रस्त थे। यहां आने के बाद महादेव का निधन फिर बा की बीमारी। उस पर से देश की दशा। वाइसराय के साथ पत्र व्यवहार चल रहा था पर कोई नतीजा नहीं निकल रहा था। बा का संवेदनशील हृदय सब कुछ महससू कर रहा था। एक दिन झुंझलाकर उन्होंने बापू से कहा, 'क्या मैंने आपसे पहले नहीं कहा था कि इतनी बड़ी सरकार के साथ लड़ाई मोल न लें ? पर आपने मेरी नहीं सुनी। आज इसी कारण हम सबको उसका फल भोगना पड़ रहा है। जनता को कुचलने में सरकार अपनी सारी शक्ति लगा रही है। लोग कब तक सहन करेंगे ? इसका परिणाम क्या होगा ? जब बा कुछ भी समझने को तैयार नहीं हुई तब बापू ने कहा, 'तुम मुझे क्या करने को कहती हो ? चलो, हम दोनों पत्र लिखकर सरकार से क्षमा-याचना कर लेते हैं। बा की झुंझलाहट और बढ़ी वे बोलीं, 'मैं क्यों किसी से माफी मांगू ? यदि तुम कहो तो मैं वाइसराय को माफी के लिए पत्र लिखूं। बापू ने कहा। बापू के स्वाभिमान को ठेस पहुंचे बा को किसी भी प्रकार मंजूर नहीं था। क्रोधावेग में बोलीं, 'सुकुमार लड़कियां जेल में पड़ी हैं। वे माफी नहीं मांगती और आप माफी मांगेंगे ? अब जो किया उसका फल भोगिए। आपके साथ हम भी भुगतेंगे। महादेव जेल में मर गया। अब मेरी बारी है।' इन्हीं दिनों बापू ने इक्कीस दिन के उपवास की घोषणा की। सरोजिनी नायडू ने कहा कि बापू आपका उपवास बा की जान ले लेगा। तब बापू ने कहा कि बा कितनी साहसी है इसका तुम्हें अनुमान नहीं है। तुम सभी से अधिक धैर्य के साथ वह इसे संभाल लेगी।' बा निरंतर भगवान से बापू के स्वास्थ्य लाभ की कामना करती रहीं। 1943 में 2 अक्टूबर को बापू का जन्मदिन आगा खां महल में मनाया गया। इस दिन बा लाल किनारे की साड़ी पहनी हुई थीं। यह बापू के हाथ के कते सूत से बनी थी। इस साड़ी के लिए वे कहा करतीं, 'मृत्यु के बाद मुझे इसी साड़ी को पहनाकर विदा करना।' आगा खां महल में बंदी रहते हुए ही बा का स्वास्थ्य दिनोंदिन गिरता चला गया। बापू ने अंत तक बा की प्राणपण से सेवा कर अपना पतिधर्म निभाया। 21 फरवरी 1944 को बा की तबीयत काफी खराब हो गई। देवदास बा की सेवा में बराबर व्यस्त रहे। कभी उनकी पीठ और छाती सहलाते, कभी भावुकता से सिर पर हाथ फेरते। बा बोलने लगीं, 'अब तू सबको संभालना। बापू जी तो साधु हैं। उन्हें सारी दुनिया की चिंता है। हरिलाल को तो तू जानता ही है। इसलिए परिवार को तुम्हें ही संभालना है।' 22 फरवरी को शिवरात्रि का दिन था। बा ने विकल स्वर में सुशीला नैयर से कहा क्या अब मैं जा रही हूं ? क्या मैं मर रही हूं ? बापू उनका हाथ और मस्तक सहलाते रहे। देवदास अपने साथ गंगाजल लाए। बा ने मुंह खोला और बापू ने एक चम्मच गंगाजल बा के मुंह में डाला। गंगाजल पीकर बा की आत्मा को बहुत शांति मिली। देवदास की इच्छा से इंग्लैंड से पेनिसिलीन मंगवाया गया। उनका विश्वास था कि इससे बा की जान बचाई जा सकती थी, पर बापू अंतिम समय में बा को कोई कष्ट नहीं देना चाहते थे। उनका मत था कि अब बा ईश्वर के हाथों में है।

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवंबर 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

जब बापू टहलने के लिए जाना ही चाहते थे तभी उनके कानों में थरथराती हुई आवाज आई। बापू बा के कमरे की ओर भागे। बापू ने पूछा कैसा लग रह है ? बा बोलीं पता नहीं। इतने में बा के भाई माधवदास पहुंचे तब बा की अश्रुधारा बह निकली। बापू का हाथ बा का मस्तक सहलाता रहा। बा की जीवंतता घट गई। सारे बंधनों को तोड़कर बा शाम 7:35 बजे सबसे विदा ले चुकी थीं। बा की इच्छा थी कि बापू की गोद में अंतिम सांस लें। भगवान ने उनकी इच्छा पूर्ण की। बापू की आंखें भर आई, पर उन्होंने अपने को बांध लिया। सभी लोगों की इच्छा थी कि बा का अंतिम संस्कार चंदन की लड़कियों से किया जाए। लेकिन बापू ने कहा बा एक गरीब व्यक्ति की पत्नी थीं। एक गरीब व्यक्ति की अंत्येष्टि क्रिया के लिए चंदन की लकड़ी कहां से लाए ? जब जेल निरीक्षक ने उनके पास चंदन की लकड़ी होने की बात कही तब बापू ने मना नहीं किया। बापू अग्निदाह के बाद शाम चार बजे तक वहीं बैठे रहे। अनेक बार उन्हें चलने के लिए कहा गया। तब बापू बोले 'बासठ साल के साथ को मैं इस प्रकार कैसे छोड़ सकता हूं ? मुझे विश्वास है कि वह मुझे क्षमा नहीं करेगी।' बापू ने हंसते हुए कहा। सबके चले जाने के बाद रात में बापू कहने लगे, ''बा के बिना जीवन की मैं कल्पना नहीं कर सकता। मैं चाहता था कि बा मेरे रहते चली जाए, ताकि मुझे चिंता न रहे कि मेरे बाद उसका क्या होगा। वह मेरे जीवन का अविभाज्य अंग थी। उसके जाने से जो सूनापन पैदा हो गया है, वह कभी नहीं भर सकता।' दुनिया में ऐसी दाम्पत्य मिसालें बहुत कम हैं, जिन्होंने अपना सर्वस्व देश और मनुष्य मात्र की सेवा में समर्पित कर दिया।

संकलित: कस्तूरबा, कमला, प्रभावती: आषाप्रसाद, वाणी प्रकाशन दिल्ली